अद्वितीय अध्यात्मिक ज्ञान

सतलोक आश्रम

(1) रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०) भारत।
(2) सतलोक आश्रम, दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०) भारत।
☎ +91-9992600801, +91-9992600802, +91-9992600803
+91-9812166044, +91-9812151088,+91- 9812026821,+91- 9812142324
e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com
visit us at - www.jagatgururampalji.org

विषय सूची

अवश्य जानिये

1. कौन ब्रह्मा का पिता है? कौन विष्णु की माँ? शंकर का दादा कौन हमकूँ दे बता?
2. हमको जन्म देने व मारने में किस प्रभु का स्वार्थ है?
3. पूर्ण सन्त की क्या पहचान है?
4. क्या किसी भी गुरु की शरण में जाने से मुक्ति संभव है?
5. क्या ब्रह्मा, विष्णु, महेश चौरासी लाख योनियों से मुक्त हैं?
6. गीता व पुराणों के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश अजर-अमर नहीं हैं, क्यों?
7. हम सभी आत्मायें कहाँ से आयी हैं?
8. संपूर्ण जगत में एक ही सतगुरु होता है उसको कौन नियुक्त करता है?
9. सद्गुरु के क्या लक्षण हैं?
10. ब्रह्मा, विष्णु, महेश किसकी भक्ति करते है?
11. देवी, देवता, हनुमान, माई-मशानी एवं पित्तर पूजा से पूर्ण मोक्ष सम्भव नहीं है क्यों? (गीतानुसार)
12. तीर्थ व्रत तर्पण एवं श्राद्ध निकालने से कोई लाभ नहीं है, क्यों? (गीतानुसार)
13. मनमुखी नाम जैसे राम, हरे कृष्ण, हरि ओम या अन्य से सुख एवं मुक्ति नहीं है, क्यों? (गीतानुसार)

इन सभी प्रश्नों के जवाब जानने के लिए सुनिये सद्गुरु रामपाल जी महाराज के अमृत वचन।

विशेष :- दो पुस्तकें : भक्ति सौदागर को संदेश भाग 1 तथा 2 मुफ्त प्राप्त करें। डाक खर्च भी आपको नहीं देना है। कृप्या निम्न सम्पर्क सूत्रों पर अपना पता लिखाऐं। पुस्तकें आप के पास पहुँच जाऐंगी।

सतलोक आश्रम

(1) रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०) भारत।

(2) सतलोक आश्रम, दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०) भारत।

☎ **+91-9992600801, +91-9992600802, +91-9992600803**
+91-9812166044, +91-9812151088,+91- 9812026821,+91- 9812142324
e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com
visit us at - www.jagatgururampalji.org

भूमिका

पूर्ण परमात्मा(पूर्ण ब्रह्म) अर्थात् सतपुरुष का ज्ञान न होने के कारण सर्व विद्वानों को ब्रह्म(निरंजन-काल भगवान जिसे महाविष्णु कहते हैं) तक का ज्ञान है। पवित्र आत्माऐं चाहे वे ईसाई हैं, मुसलमान, हिन्दू या सिख हैं इनको केवल अव्यक्त अर्थात् एक ओंकार परमात्मा की पूजा का ही ज्ञान पवित्र शास्त्रों (जैसे पुराणों, उपनिष्दों, कतेबों, वेदों, गीता आदि नामों से जाना जाता है) से हो पाया। क्योंकि इन सर्व शास्त्रों में ज्योति स्वरूपी(प्रकाशमय) परमात्मा ब्रह्म की ही पूजा विधि का वर्णन है तथा जानकारी पूर्ण ब्रह्म(सतपुरुष) की भी है। पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) न मिलने से पूर्ण ब्रह्म की पूजा का ज्ञान नहीं हुआ। जिस कारण से पवित्र आत्माऐं ईसाई फोर्मलैस गौड (निराकार प्रभु) कहते हैं। जबकि पवित्र बाईबल में उत्पत्ति विषय के सृष्टि की उत्पत्ति नामक अध्याय में लिखा है कि प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया तथा छः दिन में सृष्टि रचना करके सातवें दिन विश्राम किया। इससे स्वसिद्ध है कि प्रभु भी मनुष्य जैसे आकार में है। इसी का प्रमाण पवित्र कुर्आन शरीफ में भी है। इसी प्रकार पवित्र आत्माऐं मुस्लमान प्रभु को बेचून (निराकार) अल्लाह (प्रभु) कहते हैं, जबकि पवित्र कुर्आन शरीफ के सुरत फूर्कानि संख्या 25, आयत संख्या 52 से 59 में लिखा है कि जिस प्रभु ने छः दिन में सृष्टि रची तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, उसका नाम कबीर है। पवित्र कुर्आन को बोलने वाला प्रभु किसी और कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है तथा कह रहा है कि वही कबीर प्रभु ही पूजा के योग्य है, पाप क्षमा करने वाला है, परन्तु उसकी भक्ति के विषय में मुझे ज्ञान नहीं, किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। उपरोक्त दोनों पवित्र शास्त्रों (पवित्र बाईबल व पवित्र कुर्आन शरीफ) ने मिल-जुल कर सिद्ध कर दिया है कि परमेश्वर मनुष्य सदृश शरीर युक्त है। उसका नाम कबीर है। पवित्र आत्माऐं हिन्दू व सिख उसे निरंकार(निर्गुण ब्रह्म) के नाम से जानते हैं। जबकि आदरणीय नानक साहेब जी ने सतपुरुष के आकार रूप में दर्शन करने के बाद अपनी अमृतवाणी महला पहला 'श्रीगुरु ग्रन्थ साहेब' में पूर्ण ब्रह्म का आकार होने का प्रमाण दिया है, लिखा है ''धाणक रूप रहा करतार(पृष्ठ 24), हक्का कबीर करीम तू बेएब परवरदिगार (पृष्ठ 721)'' तथा प्रभु के मिलने से पहले पवित्र हिन्दू धर्म में जन्म होने के कारण श्री ब्रजलाल पाण्डे से पवित्र गीता जी को पढ़कर श्री नानक साहेब जी ब्रह्म को निराकार कहा करते थे। उनकी दोनों प्रकार की अमृतवाणी गुरु ग्रन्थ साहेब में लिखी हैं। हिन्दुओं के शास्त्रों में पवित्र वेद व गीता विशेष हैं, उनके साथ-2 अठारह पुराणों को भी समान दृष्टी से देखा जाता है। श्रीमद् भागवत सुधासागर, रामायण, महाभारत भी विशेष प्रमाणित शास्त्रों में से हैं। विशेष विचारणीय विषय यह है कि जिन पवित्र शास्त्रों को हिन्दुओं के शास्त्र कहा जाता है, जैसे पवित्र चारों वेद व पवित्र श्रीमद् भगवत गीता जी आदि, वास्तव में ये सद् शास्त्र केवल पवित्र हिन्दु धर्म के ही नहीं हैं। ये सर्व शास्त्र महर्षि व्यास जी द्वारा उस समय लिखे गए थे जब कोई अन्य धर्म नहीं था। इसलिए पवित्र वेद व पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी तथा पवित्र पुराणादि सर्व मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र 15-16 तथा अध्याय 5 मंत्र 1 व 32 में स्पष्ट किया है कि ''{अग्नेः तनूर् असि, विष्णवे त्वा सोमस्य तनुर् असि, कविरंघारिः असि, स्वज्र्योति ऋतधामा असि} परमेश्वर का शरीर है, पाप के शत्रु परमेश्वर का नाम कविर्देव है, उस सर्व पालन कर्त्ता अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष का शरीर है। वह स्वप्रकाशित शरीर वाला प्रभु सत धाम अर्थात् सतलोक में रहता है। पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कविर्मनीषी अर्थात् कविर्देव ही वह तत्वदर्शी है जिसकी चाह सर्व प्राणियों को है, वह कविर्देव परिभूः अर्थात् सर्व प्रथम प्रकट हुआ, जो सर्व प्राणियों की सर्व मनोकामना पूर्ण करता है। वह कविर्देव स्वयंभूः अर्थात् स्वयं प्रकट होता है, उसका शरीर किसी माता-पिता के संयोग से (शुक्रम् अकायम्) वीर्य से बनी काया नहीं है, उसका शरीर (अस्नाविरम्) नाड़ी रहित है अर्थात् पांच तत्व का नहीं है, केवल तेजपुंज से एक तत्व का है, जैसे एक तो मिट्टी की मूर्ति बनी है, उसमें भी नाक, कान आदि अंग हैं तथा दूसरी सोने की मूर्ति बनी है,

उसमें भी सर्व अंग हैं। ठीक इसी प्रकार पूज्य कविर्देव का शरीर तेज तत्व का बना है, इसलिए उस परमेश्वर के शरीर की उपमा में अग्नेः तनूर् असि वेद में कहा है।

सर्व प्रथम पवित्र शास्त्र श्रीमद्भगवत गीता जी पर विचार करते हैं।

"पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी का ज्ञान किसने कहा?"

पवित्र गीता जी के ज्ञान को उस समय बोला गया था जब महाभारत का युद्ध होने जा रहा था। अर्जुन ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया था। युद्ध क्यों हो रहा था? इस युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा भी नहीं दी जा सकती क्योंकि दो परिवारों का सम्पत्ति वितरण का विषय था। कौरवों तथा पाण्डवों का सम्पत्ति बंटवारा नहीं हो रहा था। कौरवों ने पाण्डवों को आधा राज्य भी देने से मना कर दिया था। दोनों पक्षों का बीच-बचाव करने के लिए प्रभु श्री कृष्ण जी तीन बार शान्ति दूत बन कर गए। परन्तु दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी जिद्द पर अटल थे। श्री कृष्ण जी ने युद्ध से होने वाली हानि से भी परिचित कराते हुए कहा कि न जाने कितनी बहन विधवा होंगी ? न जाने कितने बच्चे अनाथ होंगे ? महापाप के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। युद्ध में न जाने कौन मरे, कौन बचे ? तीसरी बार जब श्री कृष्ण जी समझौता करवाने गए तो दोनों पक्षों ने अपने-अपने पक्ष वाले राजाओं की सेना सहित सूची पत्र दिखाया तथा कहा कि इतने राजा हमारे पक्ष में हैं तथा इतने हमारे पक्ष में। जब श्री कृष्ण जी ने देखा कि दोनों ही पक्ष टस से मस नहीं हो रहे हैं, युद्ध के लिए तैयार हो चुके हैं। तब श्री कृष्ण जी ने सोचा कि एक दाव और है वह भी आज लगा देता हूँ। श्री कृष्ण जी ने सोचा कि कहीं पाण्डव मेरे सम्बन्धी होने के कारण अपनी जिद्द इसलिए न छोड़ रहे हों कि श्री कृष्ण हमारे साथ हैं, विजय हमारी ही होगी(क्योंकि श्री कृष्ण जी की बहन सुभद्रा जी का विवाह श्री अर्जुन जी से हुआ था)। श्री कृष्ण जी ने कहा कि एक तरफ मेरी सर्व सेना होगी और दूसरी तरफ मैं होऊँगा और इसके साथ-साथ मैं वचन बद्ध भी होता हूँ कि मैं हथियार भी नहीं उठाऊँगा। इस घोषणा से पाण्डवों के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। उनको लगा कि अब हमारी पराजय निश्चित है। यह विचार कर पाँचों पाण्डव यह कह कर सभा से बाहर गए कि हम कुछ विचार कर लें। कुछ समय उपरान्त श्री कृष्ण जी को सभा से बाहर आने की प्रार्थना की। श्री कृष्ण जी के बाहर आने पर पाण्डवों ने कहा कि हे भगवन् ! हमें पाँच गाँव दिलवा दो। हम युद्ध नहीं चाहते हैं। हमारी इज्जत भी रह जाएगी और आप चाहते हैं कि युद्ध न हो, यह भी टल जाएगा।

पाण्डवों के इस फैसले से श्री कृष्ण जी बहुत प्रसन्न हुए तथा सोचा कि बुरा समय टल गया। श्री कृष्ण जी वापिस आए, सभा में केवल कौरव तथा उनके समर्थक शेष थे। श्री कृष्ण जी ने कहा दुर्योधन युद्ध टल गया है। मेरी भी यह हार्दिक इच्छा थी। आप पाण्डवों को पाँच गाँव दे दो, वे कह रहे हैं कि हम युद्ध नहीं चाहते। दुर्योधन ने कहा कि पाण्डवों के लिए सुई की नोक तुल्य भी जमीन नहीं है। यदि उन्हें राज्य चाहिए तो युद्ध के लिए कुरुक्षेत्र के मैदान में आ जाऐं। इस बात से श्री कृष्ण जी ने नाराज होकर कहा कि दुर्योधन तू इंसान नहीं शैतान है। कहाँ आधा राज्य और कहाँ पाँच गाँव? मेरी बात मान ले, पाँच गाँव दे दे। श्री कृष्ण से नाराज होकर दुर्योधन ने सभा में उपस्थित योद्धाओं को आज्ञा दी कि श्री कृष्ण को पकड़ो तथा कारागार में डाल दो। आज्ञा मिलते ही योद्धाओं ने श्री कृष्ण जी को चारों तरफ से घेर लिया। श्री कृष्ण जी ने अपना विराट रूप दिखाया। जिस कारण सर्व योद्धा और कौरव डर कर कुर्सियों के नीचे घुस गए तथा शरीर के तेज प्रकाश से आँखें बंद हो गई। श्री कृष्ण जी वहाँ से निकल गए।

आओ विचार करें :- उपरोक्त विराट रूप दिखाने का प्रमाण संक्षिप्त महाभारत गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित में प्रत्यक्ष है। जब कुरुक्षेत्र के मैदान में पवित्र गीता जी का ज्ञान सुनाते समय अध्याय 11 श्लोक 32 में पवित्र गीता बोलने वाला प्रभु कह रहा है कि 'अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ। अब सर्व लोकों को खाने के लिए प्रकट हुआ हूँ।' जरा सोचें कि श्री कृष्ण जी तो पहले से ही श्री अर्जुन जी के

साथ थे। यदि पवित्र गीता जी के ज्ञान को श्री कृष्ण जी बोल रहे होते तो यह नहीं कहते कि अब प्रवर्त्त हुआ हूँ। फिर अध्याय 11 श्लोक 21 व 46 में अर्जुन कह रहा है कि भगवन् ! आप तो ऋषियों, देवताओं तथा सिद्धों को भी खा रहे हो, जो आप का ही गुणगान पवित्र वेदों के मंत्रों द्वारा उच्चारण कर रहे हैं तथा अपने जीवन की रक्षा के लिए मंगल कामना कर रहे हैं। कुछ आपके दाढ़ों में लटक रहे हैं, कुछ आप के मुख में समा रहे हैं। हे सहस्त्र बाहु अर्थात् हजार भुजा वाले भगवान ! आप अपने उसी चतुर्भुज रूप में आईये। मैं आपके विकराल रूप को देखकर धीरज नहीं कर पा रहा हूँ।

अध्याय 11 श्लोक 47 में पवित्र गीता जी को बोलने वाला प्रभु काल कह रहा है कि 'हे अर्जुन यह मेरा वास्तविक काल रूप है, जिसे तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा था।'

उपरोक्त विवरण से एक तथ्य तो यह सिद्ध हुआ कि कौरवों की सभा में विराट रूप श्री कृष्ण जी ने दिखाया था तथा यहाँ युद्ध के मैदान में विराट रूप काल (श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके अपना विराट रूप काल) ने दिखाया था। नहीं तो यह नहीं कहता कि यह विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। क्योंकि श्री कृष्ण जी अपना विराट रूप कौरवों की सभा में पहले ही दिखा चुके थे।

दूसरी यह बात सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी को बोलने वाला काल(ब्रह्म-ज्योति निरंजन) है, न कि श्री कृष्ण जी। क्योंकि श्री कृष्ण जी ने पहले कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ तथा बाद में कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ। श्री कृष्ण जी काल नहीं हो सकते। उनके दर्शन मात्र को तो दूर-दूर क्षेत्र के स्त्री तथा पुरुष तड़फा करते थे। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में है जिसमें गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे उस घटिया (अनुत्तम) विधान को नहीं जानते कि मैं कभी भी मनुष्य की तरह किसी के सामने प्रकट नहीं होता। मैं अपनी योगमाया से छिपा रहता हूँ।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता श्री कृष्ण जी नहीं है। क्योंकि श्री कृष्ण जी तो सर्व समक्ष साक्षात् थे। श्री कृष्ण नहीं कहते कि मैं अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। इसलिए गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी के अन्दर प्रेतवत् प्रवेश करके काल ने बोला था।

नोट :- विराट रूप क्या होता है ?

विराट रूप : आप दिन के समय या चाँदनी रात्री में जब आप के शरीर की छाया छोटी लगभग शरीर जितनी लम्बी हो या कुछ बड़ी हो, उस छाया के सीने वाले स्थान पर दो मिनट तक एक टक देखें, चाहे आँखों से पानी भी क्यों न गिरें। फिर सामने आकाश की तरफ देखें। आपको अपना ही विराट रूप दिखाई देगा, जो सफेद रंग का आसमान को छू रहा होगा। इसी प्रकार प्रत्येक मानव अपना विराट रूप रखता है। परन्तु जिनकी भक्ति शक्ति ज्यादा होती है, उनका उतना ही तेज अधिक होता जाता है।

इसी प्रकार श्री कृष्ण जी भी पूर्व भक्ति शक्ति से सिद्धि युक्त थे, उन्होंने भी अपनी सिद्धि शक्ति से अपना विराट रूप प्रकट कर दिया, जो काल के तेजोमय शरीर(विराट) से कम तेजोमय था। तीसरी बात यह सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी बोलने वाला प्रभु काल सहस्त्रबाहु अर्थात् हजार भुजा युक्त है तथा श्री कृष्ण जी तो श्री विष्णु जी के अवतार हैं जो चार भुजा युक्त हैं। श्री विष्णु जी सोलह कला युक्त हैं तथा श्री ज्योति निरंजन काल भगवान एक हजार कला युक्त है। जैसे एक बल्ब 60 वाट का होता है, एक बल्ब 100 वाट का होता है, एक बल्ब 1000 वाट का होता है, रोशनी सर्व बल्बों की होती है, परन्तु बहुत अन्तर होता है। ठीक इसी प्रकार दोनों प्रभुओं की शक्ति तथा विराट रूप का तेज भिन्न-भिन्न था।

इस तत्वज्ञान के प्राप्त होने से पूर्व जो गीता जी के ज्ञान को समझाने वाले महात्मा जी थे, उनसे प्रश्न किया करते थे कि पहले तो भगवान श्री कृष्ण जी शान्ति दूत बनकर गए थे तथा कहा था कि युद्ध करना महापाप है। जब श्री अर्जुन जी ने स्वयं युद्ध करने से मना करते हुए कहा कि हे देवकी नन्दन मैं युद्ध नहीं करना चाहता हूँ। सामने खड़े स्वजनों व नातियों तथा सैनिकों का होने वाला विनाश देख कर

मैंने अटल फैसला कर लिया है कि मुझे तीन लोक का राज्य भी प्राप्त हो तो भी मैं युद्ध नहीं करूँगा। मैं तो चाहता हूँ कि मुझ निहत्थे को दुर्योधन आदि तीर से मार डालें, ताकि मेरी मृत्यु से युद्ध में होने वाला विनाश बच जाए। हे श्री कृष्ण ! मैं युद्ध न करके भिक्षा का अन्न खाकर भी निर्वाह करना उचित समझता हूँ। हे कृष्ण ! स्वजनों को मारकर तो पाप को ही प्राप्त होंगे। मेरी बुद्धि काम करना बंद कर गई है। आप हमारे गुरु हो, मैं आपका शिष्य हूँ। आप जो हमारे हित में हो वही दीजिए। परन्तु मैं नहीं मानता हूँ कि आपकी कोई भी सलाह मुझे युद्ध के लिए राजी कर पायेगी अर्थात् मैं युद्ध नहीं करूँगा। (प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 1 श्लोक 31 से 39, 46 तथा अध्याय 2 श्लोक 5 से 8)

फिर श्री कृष्ण जी में प्रवेश काल बार-बार कह रहे हैं कि अर्जुन कायर मत बन, युद्ध कर। या तो युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा, या युद्ध जीत कर पृथ्वी के राज्य को भोगेगा, आदि-आदि कह कर ऐसा भयंकर विनाश करवा डाला जो आज तक के संत-महात्माओं तथा सभ्य लोगों के चरित्र में ढूंढने से भी नहीं मिलता है। तब वे नादान गुरु जी(नीम-हकीम) कहा करते थे कि अर्जुन क्षत्री धर्म को त्याग रहा था। इससे क्षत्रित्व को हानि तथा शूरवीरता का सदा के लिए विनाश हो जाता। अर्जुन को क्षत्री धर्म पालन करवाने के लिए यह महाभारत का युद्ध श्री कृष्ण जी ने करवाया था। पहले तो मैं उनकी इस नादानों वाली कहानी से चुप हो जाता था, क्योंकि मुझे स्वयं ज्ञान नहीं था।

पुनर् विचार करें :- भगवान श्री कृष्ण जी स्वयं क्षत्री थे। कंस के वध के उपरान्त श्री अग्रसैन जी ने मथुरा की बाग-डोर अपने दोहते श्री कृष्ण जी को संभलवा दी थी। एक दिन नारद जी ने श्री कृष्ण जी को बताया कि निकट ही एक गुफा में एक सिद्धि युक्त राक्षस राजा मुचकन्द सोया पड़ा है। वह छः महीने सोता है तथा छः महीने जागता है। जागने पर छः महीने युद्ध करता रहता है तथा छः महीने सोने के समय यदि कोई उसकी निन्द्रा भंग कर दे तो मुचकन्द की आँखों से अग्नि बाण छूटते हैं तथा सामने वाला तुरन्त मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, आप सावधान रहना। यह कह कर श्री नारद जी चले गए।

कुछ समय उपरान्त श्री कृष्ण जी को छोटी उम्र में मथुरा के सिंहासन पर बैठा देख कर एक काल्यवन नामक राजा ने अठारह करोड़ सैना लेकर मथुरा पर आक्रमण कर दिया। श्री कृष्ण जी ने देखा कि दुश्मन की सैना बहु संख्या में है तथा न जाने कितने सैनिक मृत्यु को प्राप्त होंगे, क्यों न काल्यवन का वध मुचकन्द से करवा दूं। यह विचार कर भगवान श्री कृष्ण जी ने काल्यवन को युद्ध के लिए ललकारा तथा युद्ध छोड़ कर(क्षत्री धर्म को भूलकर विनाश टालना आवश्यक जानकर) भाग लिये और उस गुफा में प्रवेश किया जिसमें मुचकन्द सोया हुआ था। मुचकन्द के शरीर पर अपना पीताम्बर(पीली चद्दर) डाल कर श्री कृष्ण जी गुफा में गहरे जाकर छुप गए। पीछे-पीछे काल्यवन भी उसी गुफा में प्रवेश कर गया। मुचकन्द को श्री कृष्ण कर समझ उसका पैर पकड़ कर घुमा दिया तथा कहा कि कायर तुझे छुपे हुए को थोड़े ही छोडूंगा। पीड़ा के कारण मुचकन्द की निंद्रा भंग हुई, नेत्रों से अग्नि बाण निकलें तथा काल्यवन का वध हुआ। काल्यवन के सैनिक तथा मंत्री अपने राजा के शव को लेकर वापिस चल पड़े। क्योंकि युद्ध में राजा की मृत्यु सैना की हार मानी जाती थी। जाते हुए कह गए कि हम नया राजा नियुक्त करके शीघ्र ही आयेंगे तथा श्री कृष्ण तुझे नहीं छोड़ेंगे।

श्री कृष्ण जी ने अपने मुख्य अभियन्ता (चीफ इन्जिनियर) श्री विश्वकर्मा जी को बुला कर कहा कि कोई ऐसा स्थान खोजो, जिसके तीन तरफ समुद्र हो तथा एक ही रास्ता(द्वार) हो। वहाँ पर अति शीघ्र एक द्वारिका(एक द्वार वाली) नगरी बना दो। हम शीर्घ ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे। ये मूर्ख लोग यहाँ चैन से नहीं जीने देंगे। श्री कृष्ण जी इतने नेक आत्मा तथा युद्ध विपक्षी थे कि अपने क्षत्रीत्व को भी दाव पर रख कर जुल्म को टाला। क्या फिर वही श्री कृष्ण जी अपने प्यारे साथी व सम्बन्धी को ऐसी बुरी सलाह दे सकते हैं तथा स्वयं युद्ध न करने का वचन करने वाले दूसरे को युद्ध की प्रेरणा दे सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। गीता अध्याय 18 श्लोक 43 में गीता ज्ञान दाता ने क्षत्री के स्वभाविक कर्मों का उल्लेख करते हुए कहा है कि ''युद्ध से न भागना'' आदि-२ क्षत्री के स्वभाविक कर्म है। इस से भी सिद्ध हुआ

कि गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं बोला। क्योंकि श्री कृष्ण जी स्वयं क्षत्री होते हुए कालयवन के सामने से युद्ध से भाग गए थे। व्यक्ति स्वयं किए कर्म के विपरीत अन्य को राय नहीं देता। न उसकी राय श्रोता को ठीक जचेगी। वह उपहास का पात्र बनेगा। यह गीता ज्ञान ब्रह्म(काल) ने प्रेतवत् श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला था। भगवान श्री कृष्ण रूप में स्वयं श्री विष्णु जी ही अवतार धार कर आए थे।

एक समय श्री भृगु ऋषि ने आराम से बैठे भगवान श्री विष्णु जी(श्री कृष्ण जी) के सीने में लात घात किया। श्री विष्णु जी ने श्री भृगु ऋषि जी के पैर को सहलाते हुए कहा कि 'हे ऋषिवर! आपके कोमल पैर को कहीं चोट तो नहीं आई, क्योंकि मेरा सीना तो कठोर पत्थर जैसा है।' यदि श्री विष्णु जी(श्री कृष्ण जी) युद्ध प्रिय होते तो सुदर्शन चक्र से श्री भृगु जी के इतने टुकड़े कर सकते थे कि गिनती न होती।

वास्तविकता यह है कि काल भगवान जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का प्रभु है, उसने प्रतिज्ञा की है कि मैं स्थूल शरीर में व्यक्त(मानव सदृश अपने वास्तविक) रूप में सबके सामने नहीं आऊँगा। उसी ने सूक्ष्म शरीर बना कर प्रेत की तरह श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके पवित्र गीता जी का ज्ञान तो सही(वेदों का सार) कहा, परन्तु युद्ध करवाने के लिए भी अटकल बाजी में कसर नहीं छोड़ी। काल(ब्रह्म) कौन है?

जब तक महाभारत का युद्ध समाप्त नहीं हुआ तब तक ज्योति निरंजन (काल - ब्रह्म - क्षर पुरुष) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश रहा तथा युधिष्ठिर जी से झूठ बुलवाया कि कह दो कि अश्वत्थामा मर गया, श्री बबरु भान(खाटू श्याम जी) का शीश कटवाया तथा रथ के पहिए को हथियार रूप में उठाया, यह सर्व काल ही का किया-कराया उपद्रव था, प्रभु श्री कृष्ण जी का नहीं। महाभारत का युद्ध समाप्त होते ही काल भगवान श्री कृष्ण जी के शरीर से निकल गया। श्री कृष्ण जी ने श्री युधिष्ठिर जी को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) की राजगद्दी पर बैठाकर द्वारिका जाने को कहा। तब अर्जुन आदि ने प्रार्थना की कि हे श्री कृष्ण जी! आप हमारे पूज्य गुरुदेव हो, हमें एक सतसंग सुना कर जाना, ताकि हम आपके सद् वचनों पर चल कर अपना आत्म-कल्याण कर सकें।

यह प्रार्थना स्वीकार करके श्री कृष्ण जी ने तिथि, समय तथा स्थान निहित कर दिया। निश्चित तिथि को श्री अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण जी से कहा कि प्रभु आज वही पवित्र गीता जी का ज्ञान ज्यों का त्यों सुनाना, क्योंकि मैं बुद्धि के दोष से भूल गया हूँ। तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि हे अर्जुन तू निश्चय ही बड़ा श्रद्धाहीन है। तेरी बुद्धि अच्छी नहीं है। ऐसे पवित्र ज्ञान को तूं क्यों भूल गया ? फिर स्वयं कहा कि अब उस पूरे गीता ज्ञान को मैं नहीं कह सकता अर्थात् मुझे ज्ञान नहीं। कहा कि उस समय तो मैंने योग युक्त होकर बोला था। विचारणीय विषय है कि यदि भगवान श्री कृष्ण जी युद्ध के समय योग युक्त हुए होते तो शान्ति समय में योग युक्त होना कठीन नहीं था। जबकि श्री व्यास जी ने वही पवित्र गीता जी का ज्ञान वर्षों उपरान्त ज्यों का त्यों लिपिबद्ध कर दिया। उस समय वह ब्रह्म(काल-ज्योति निरंजन) ने श्री व्यास जी के शरीर में प्रवेश कर के पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी को लिपिबद्ध कराया, जो वर्तमान में आप के कर कमलों में है।

प्रमाण के लिए संक्षिप्त महाभारत पृष्ठ नं. 667 तथा पुराने के पृष्ठ नं. 1531 पर :-

न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः।।
परं हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया।
(महाभारत, आश्रवः **1612-13**)

भगवान बोले - 'वह सब-का-सब उसी रूपमें फिर दुहरा देना अब मेरे वशकी बात नहीं है। उस समय मैंने योगयुक्त होकर परमात्मतत्वका वर्णन किया था।'

संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग के

पृष्ठ नं. **1531** से सहाभार :

('श्रीकृष्णका अर्जुनसे गीता का विषय पूछना सिद्ध महर्षि वैशम्पायन और काश्यपका संवाद') - पाण्डुनन्दन अर्जुन श्रीकृष्णके साथ रहकर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने एक बार उस रमणीय सभाकी ओर दृष्टि डालकर भगवान्‌से यह वचन कहा --'देवकीनन्दन ! जब युद्धका अवसर उपस्थित था, उस समय मुझे आपके माहात्म्यका ज्ञान और ईश्वरीय स्वरूपका दर्शन हुआ था, किंतु केशव ! आपने स्नेहवश पहले मुझे जो ज्ञानका उपदेश किया था, वह सब इस समय बुद्धिके दोषसे भूल गया है। उन विषयोंको सुननेके लिये बारंबार मेरे मनमें उत्कण्ठा होती है, इधर, आप जल्दी ही द्वारका जानेवाले हैं। अतः पुनः वह सब विषय मुझे सुना दीजिये।

वैशम्पायनजी कहते हैं --अर्जुनके ऐसा कहनेपर वक्ताओं में श्रेष्ठ महातेजस्वी भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें गलेसे लगाकर इस प्रकार उत्तर दिया।

श्रीकृष्ण बोले --अर्जुन ! उस समय मैंने तुम्हें अत्यन्त गोपनीय विषयका श्रवण कराया था, अपने स्वरूपभूत धर्म सनातन पुरुषोत्तमतत्त्वका परिचय दिया था और (शुक्ल-कृष्ण गतिका निरूपण करते हुए) नित्य लोकोंका भी वर्णन किया था। किंतु तुमने जो अपनी नासमझीके कारण उस उपदेशको याद नहीं रक्खा यह जानकर मुझे बड़ा खेद हुआ है। उन बातोंका अब पूरा-पूरा स्मरण होना सम्भव नहीं जान पड़ता। पाण्डुनन्दन ! निश्चय ही तुम बड़े श्रद्धाहीन हो, तुम्हारी बुद्धि अच्छी नहीं जान पड़ती। अब मेरे लिये उस उपदेशको ज्यों-का-त्यों दुहरा देना कठिन है, क्योंकि उस समय योगयुक्त होकर मैंने परमात्मतत्त्वका वर्णन किया था। (अधिक जानकारी के लिए पढ़ें - 'संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग')

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री कृष्ण जी ने श्रीमद्‌भगवत गीता का ज्ञान नहीं बोला, यह तो काल (ज्योति निरंजन अर्थात् ब्रह्म) ने बोला था।

अन्य प्रमाण :- (1) कुछ समय उपरान्त श्री युधिष्ठिर जी को भयंकर स्वपन आने लगे। श्री कृष्ण जी से कारण तथा समाधान पूछा तो बताया कि तुमने युद्ध में जो पाप किए हैं वह नर संहार का दोष तुम्हें दुःख दाई हो रहा है। इसके लिए एक यज्ञ करो। श्री कृष्ण जी के मुख कमल से यह वचन सुन कर श्री अर्जुन को बहुत दुःख हुआ तथा मन ही मन विचार करने लगा कि भगवान श्री कृष्ण जी पवित्र गीता बोलते समय तो कह रहे थे कि अर्जुन तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा, तूं युद्ध कर ले(पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। यदि युद्ध में मारा भी गया तो स्वर्ग का सुख भोगेगा, अन्यथा युद्ध में जीत कर पृथ्वी के राज्य का आनन्द लेगा। अर्जुन ने विचार किया कि जो समाधान दुःख निवारण का श्री कृष्ण जी ने बताया है इसमें करोड़ों रूपया व्यय होना है। जिससे बड़े भाई युधिष्ठिर का कष्ट निवारण होगा। यदि मैं श्री कृष्ण जी से वाद-विवाद करूंगा कि आप पवित्र गीता जी का ज्ञान देते समय तो कह रहे थे कि तुम्हें पाप नहीं लगेगा। अब उसके विपरित कह रहे हो। इससे मेरा बड़ा भाई यह न सोच बैठे कि करोड़ों रूपये के खर्च को देख कर अर्जुन बौखला गया है तथा मेरे कष्ट निवार्ण से प्रसन्न नहीं है। इसलिए मौन रहना उचित जान कर सहर्ष स्वीकृति दे दी कि जैसा आप कहोगे वैसा ही होगा। श्री कृष्ण जी ने उस यज्ञ की तिथि निर्धारित कर दी। वह यज्ञ भी श्री सुदर्शन स्वपच के भोजन खाने से सफल हुई।

कुछ समय उपरान्त ऋषि दुर्वासा जी के शापवश सर्व यादव कुल विनाश हो गया, श्री कृष्ण भगवान के पैर के तलुवे में एक शिकारी (जो त्रेतायुग में सुग्रीव के भाई बाली की ही आत्मा थी) ने विषाक्त तीर मार दिया। तब पाँचों पाण्डवों के घटना स्थल पर पहुँच जाने के उपरान्त श्री कृष्ण जी ने कहा कि आप मेरे शिष्य हो मैं आप का धार्मिक गुरु भी हूँ। इसलिए मेरी अन्तिम आज्ञा सुनो। एक तो यह है कि अर्जुन, द्वारिका की सर्व स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ले जाना, क्योंकि यहाँ कोई नर नहीं बचा है तथा दूसरे आप सर्व पाण्डव राज्य त्याग कर हिमालय में साधना करके शरीर को गला देना। क्योंकि तुमने महाभारत के युद्ध के दौरान जो हत्याऐं की थी, तुम्हारे शीश पर वह पाप बहुत भयंकर है। उस समय अर्जुन अपने आप को नहीं रोक सका तथा कहा प्रभु वैसे तो आप ऐसी स्थिति में हैं कि मुझे ऐसी बातें नहीं करनी चाहिऐं, परन्तु प्रभु यदि आज मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो मैं चैन से मर भी नहीं पाऊँगा। पूरा जीवन रोता रहूँगा। श्री कृष्ण जी ने कहा अर्जुन पूछ ले जो कुछ पूछना है, मेरी अन्तिम

घड़ियाँ हैं। श्री अर्जुन ने आँखों में आंसू भर कर कहा कि प्रभु बुरा न मानना। जब आपने पवित्र गीता जी का ज्ञान कहा था उस समय मैं युद्ध करने से मना कर रहा था। आपने कहा था कि अर्जुन तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। यदि युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को प्राप्त होगा और यदि विजयी हुआ तो पृथ्वी का राज्य भोगेगा तथा तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा। हमने आप ही की देख-रेख व आज्ञानुसार युद्ध किया(प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। हे भगवन ! हमारे तो एक हाथ में भी लड्डू नहीं रहा। न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग प्राप्ति हुई तथा अब राज्य त्यागने का आदेश आप दे रहे हैं, न ही पृथ्वी के राज्य का आनन्द ही भोग पाए। ऐसा छल युक्त व्यवहार करने में आपका क्या हित था? अर्जुन के मुख से यह वचन सुन कर युधिष्ठिर जी ने कहा कि अर्जुन ऐसी स्थिति में जब कि भगवान अन्तिम स्वांस गिन रहे हैं आपका शिष्टाचार रहित व्यवहार शोभा नहीं देता। श्री कृष्ण जी ने कहा अर्जुन आज मैं अन्तिम स्थिति में हूँ, तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो, आज वास्तविकता बताता हूँ कि कोई खलनायक जैसी और शक्ति है जो अपने को यन्त्र की तरह नचाती रही, मुझे कुछ मालूम नहीं मैंने गीता में क्या बोला था। परन्तु अब मैं जो कह रहा हूँ वह तुम्हारे हित में है। श्री कृष्ण जी यह वचन अश्रुयुक्त नेत्रों से कह कर प्राण त्याग गए। उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पवित्र गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं कहा। यह तो ब्रह्म(ज्योति निरंजन-काल) ने बोला है, जो इक्कीश ब्रह्मण्ड का स्वामी है। काल(ब्रह्म) कौन है?

श्री कृष्ण सहित सर्व यादवों का अन्तिम संस्कार कर अर्जुन को छोड़ कर चारों भाई इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) चले गए। पीछे से अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों को लिए आ रहा था। रास्ते में जंगली लोगों ने सर्व गोपियों को लूटा तथा कुछेक को भगा ले गए तथा अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के हाथ में वही गांडीव धनुष था जिससे महाभारत के युद्ध में अनगिन हत्याऐं कर डाली थी, वह भी नहीं चला। तब अर्जुन ने कहा कि यह श्री कृष्ण वास्तव में झूठा तथा कपटी था। जब युद्ध में पाप करवाना था तब तो मुझे शक्ति प्रदान कर दी, एक तीर से सैकड़ों योद्धाओं को मार गिराता था और आज वह शक्ति छीन ली, खड़ा-खड़ा पिट रहा हूँ। इसी विषय में पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब (कविर्देव) जी का कहना है कि श्री कृष्ण जी कपटी व झूठे नहीं थे। यह सर्व जुल्म काल(ज्योति निरंजन) कर रहा है। जब तक यह आत्मा कबीर परमेश्वर(सतपुरुष) की शरण में पूरे सन्त(तत्वदर्शी) के माध्यम से नहीं आ जाएगी, तब तक काल इसी तरह कष्ट पर कष्ट देता रहेगा। पूर्ण जानकारी तत्वज्ञान से होती है। इसीलिए काल कौन है?

अन्य प्रमाण :- (2) गीता अध्याय 10 श्लोक 9 से 11 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जो श्रद्धालु मुझ ब्रह्म का ही निरन्तर चिन्तन करते रहते हैं उनके अज्ञान को नष्ट करने के लिए में ही उनके अन्दर(आत्मभावस्थः) जीवात्मा की तरह बैठकर शास्त्रों का ज्ञान देता हूँ।

(3) श्री विष्णु पुराण(गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के चतुर्थ अंश अध्याय 2 श्लोक 21 से 26 में पृष्ठ 233 पर लिखा है कि देवताओं और राक्षसों के युद्ध में देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने कहा है कि मैं राजर्षि शशाद में शरीर में कुछ समय प्रवेश करके असुरों का नाश करूंगा।

(4) श्री विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के चतुर्थ अंश अध्याय 3 श्लोक 4 से 6 में पृष्ठ 242 पर लिखा है कि ''नागेश्वरों की प्रार्थना स्वीकार करके श्री विष्णु जी ने कहा कि मैं मान्धाता के पुत्र पुरूकुत्स के शरीर में प्रवेश करके गन्धर्वों का नाश करूंगा। {यहाँ पर विष्णु रूप में काल(ब्रह्म) बोल रहा है}

विशेष विचार :- उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने नहीं बोला, यह तो श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश होकर ब्रह्म(काल अर्थात् ज्योति निरंजन) ने बोला था।

क्योंकि वह उपरोक्त नियम से किसी भी योग्य व्यक्ति में प्रेतवत् प्रवेश करके अपना कार्य सिद्ध करता है। पश्चात् निकल जाता है जैसे अर्जुन में प्रवेश करके विरोधी सेना मार डाली पश्चात् निकल गया। फिर अर्जुन को जंगली व्यक्तियों ने मारा-पीटा। अर्जुन में पूर्व वाली शक्ति नहीं रही।

"काल की परिभाषा"

पवित्र विष्णु पुराण में वर्णन है कि भगवान विष्णु (महाविष्णु रूप में काल) का प्रथम रूप तो पुरुष (प्रभु जैसा) है परन्तु उसका परम रूप 'काल' है। जब भगवान विष्णु (काल जो महाविष्णु रूप में ब्रह्मलोक में रहता है तथा प्रकृति अर्थात् दुर्गा को अपनी पत्नी महालक्ष्मी रूप में रखता है) अपनी प्रकृति (दुर्गा) से अलग हो जाता है तो काल रूप में प्रकट हो जाता है। (विष्णु पुराण अध्याय 2 पृष्ठ 4-5 गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित, अनुवादक हैं श्री मुनिलाल गुप्त)

विशेष :- उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि यह महाविष्णु अर्थात् काल पुरुष पहले तो लगता है कि यह दयावान भगवान है। जैसे खाने के लिए अन्न, मेवा व फल आदि कितने स्वादिष्ट प्रदान किए हैं तथा पीने के लिए दूध, जल कितने स्वादिष्ट तथा प्राण दायक प्रदान किए हैं। कितनी अच्छी वायु जीने के लिए चला रखी है, कितनी विस्तृत पृथ्वी रहने तथा घूमने के लिए प्रदान की है, फिर पति-पत्नी का योग, पुत्रों व पुत्रियों की प्राप्ति से लगता है कि यह तो बड़ा दयावान प्रभु है। जिसके लोक में हम रह रहे हैं।

महाविष्णु का वास्तविक रूप काल कैसे है :- किसी के पुत्र की मृत्यु, किसी की पुत्री की मृत्यु, किसी के दोनों पुत्रों की मृत्यु, किसी का पूरा परिवार दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। किसी क्षेत्र में बाढ़ आकर हजारों व्यक्तियों की परिवार सहित मृत्यु, किसी क्षेत्र में भूकंप से लाखों व्यक्ति सपरिवार मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रकार इस विष्णु (महाविष्णु रूप में ज्योति निरंजन) का वास्तविक रूप काल है। क्योंकि ज्योति निरंजन (काल) शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करता है। इसलिए इसने अपने तीनों पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) से उत्पत्ति, स्थिति व संहार करवाता है।

उदाहरण :- पूर्ण ब्रह्म कविर्देव ने अपने प्रिय सेवक श्री धर्मदास जी द्वारा काल की स्थिति पूछने पर बताया कि जैसे कसाई बकरे पालता है। उन प्राणियों के चारे की व्यवस्था करता है, पानी का प्रबन्ध करता है, गर्मी व सर्दी से बचने के लिए कुछ मकान आदि का भी प्रबन्ध करता है, जिससे वे अबोध बकरे समझते हैं कि हमारा स्वामी बहुत नेक है। हमारा कितना ध्यान रखता है। जब कसाई उनके पास आता है तो वे नर व मादा बकरे उसे अपना सुखदाई मालिक जान कर उसको प्यार जताने के लिए आगे वाले पैर उठाकर कसाई के शरीर को स्पर्श करते हैं, कुछ उसके पैरों को चाटते हैं। कुछ को वह स्वयं छूकर कमर पर हाथ लगा कर दबा दबा कर देखता है तो वे बकरे समझते हैं कि हमें प्यार दे रहा है। परन्तु कसाई देख रहा होता है कि इस बकरे में कितने किलोग्राम मास हो चुका है। जब मास लेने के लिए ग्राहक आता है तो उस समय कसाई नहीं देखता कि किसका बाप मर रहा है, किसकी बेटी या पुत्र या सर्व परिवार मर रहा है। उनको सुविधा देने का उसका यही उद्देश्य था। ठीक इसी प्रकार सर्व प्राणी काल(ब्रह्म) साधना करके काल आहार ही बने हैं। इससे छूटने की विधि आपको इसी पुस्तक में विस्तृत मिलेगी।

एक बहन ने मुझ दास का सतसंग सुना तथा बाद में अपनी दुःख भरी कथा सुनाई जो निम्न है :--

उस बहन ने कहा महाराज जी मैं विधवा हूँ। एक पुत्र की प्राप्ति होते ही मेरे पति की मृत्यु हो गई। मैंने अपने पुत्र की परवरिश बहुत ही चाव तथा प्यार के साथ इस दृष्टि कोण से की कि कहीं पुत्र को पिता का अभाव महसूस न हो जाए। उसने जो सम्भव वस्तु की प्रार्थना की मैंने दुःखी सुखी होकर उपलब्ध करवाई। जब वह ग्यारहवीं कक्षा में कॉलेज में जाने लगा तो मोटर साईकिल की जिद कर ली। दुर्घटना के भय से मैंने बहुत मना किया, परन्तु पुत्र ने खाना नहीं खाया। तब मैंने उसके प्यारवश

होकर मोटर साईकिल जैसे-तैसे करके मोल लेकर दे दी। मैंने दूसरी शादी भी इसी उद्देश्य से नहीं करवाई की कि कहीं मेरे पुत्र को कष्ट न हो जाए। मैंने अपने पुत्र को गर्म-गर्म खाना खिलाया। वह प्रतिदिन की तरह अपने एक दोस्त को उसके घर से मोटर साईकिल पर बैठाकर कॉलेज जाने के लिए चला गया।

मैंने शेष भोजन बनाया तथा स्वयं खाने के लिए भोजन डाल कर प्रथम ग्रास ही तोड़ा था इतने में मेरे पुत्र का दोस्त दौड़ा हुआ आया, उसको कुछ चोट लगी हुई थी। उसने कहा कि चाची भईया को दुर्घटना में बहुत ज्यादा चोट आई है। इतना सुनते ही हाथ का ग्रास थाली में गिर गया। नंगे पैरों उस बच्चे के साथ पागलों की तरह रोती हुई दौड़ कर उस स्थान पर गई जहाँ मेरे पुत्र की दुर्घटना हुई थी। वहाँ पर केवल क्षति ग्रस्त मोटर साईकिल पड़ी थी। उपस्थित व्यक्तियों ने बताया कि आपके पुत्र को हस्पताल लेकर गये हैं। मैं हस्पताल पहुँची तो डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मैंने हस्पताल की दीवार को टक्कर मारी, मेरा सिर फट गया, सात टांके लगे, बेहोश हो गई, लगभग दो घंटे में होश आया।

उस दिन के बाद सर्व भगवानों के चित्र घर से बाहर फैंक दिए तथा स्वपन में भी किसी भगवान को याद नहीं करती। क्योंकि मैंने अपने पुत्र की कुशलता के लिए लोकवेद अनुसार सर्व साधनाऐं की, परन्तु कुछ भी काम नहीं आई। आज आप का सतसंग जो सृष्टि रचना का प्रकरण आपने सुनाया तथा पवित्र गीता जी से भी बताया कि यह सर्व काल का जाल है, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कसाई की तरह सर्व प्राणियों को विवश किए हुए है। मेरी तो आज आंखें खुल गई। अब फिर मन करता है कि आपका उपदेश लेकर काल जाल से निकल जाऊं। उस बहन ने उपदेश लिया तथा अपना कल्याण करवाया।

मैंने उस बहन से पूछा आप क्या साधना करते थे?

उस बहन ने उत्तर दिया :- एक सुप्रसिद्ध संत का नाम लेकर कहा कि उस मूर्ख से दस वर्ष से उपदेश भी ले रखा था। उसके बताए अनुसार नाम जाप घण्टों किया करती थी। श्री विष्णु जी का सहस्त्रनामा का जाप भी करती थी। गीता जी का नित्य पाठ, पितर पूजा (श्राद्ध निकालना) करती थी। गांव में परम्परागत बाबा श्याम जी की पूजा भी करती थी। अष्टमी तथा सोमवार का व्रत भी करती थी। निकटतम मन्दिर में प्रतिदिन जाती थी। वर्ष में दो बार वैष्णों देवी के दर्शन करने जाती थी। गुड़गांव वाली माता की पूजा भी करती थी। नवरात्रों का व्रत भी किया करती थी। एक बहन ने कहा बाबा गरीबदास जी की पूजा करने तथा वहाँ छुड़ानी धाम(जिला झज्जर) पर जाने से कोई आपत्ति नहीं आ सकती। वहाँ भी छठे महीने मेला भरता है जाया करती थी तथा पाठ भी करवाती थी। और क्या बताऊँ? बाबा हरिदास जी झाड़ौदा वाले की भी पूजा करती थी। मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। पहले तो लगता था कि मेरा परिवार सुखी है। जो उपरोक्त साधना का ही परिणाम है।

परन्तु अब आप के सतसंग से ज्ञान हुआ कि यह तो मेरा प्रारब्ध ही मिल रहा था। ये पूजायें पवित्र गीता जी में तथा पवित्र अमृत वाणी गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध थी। जिस कारण से कोई लाभ होना ही नहीं था। हमारा क्या दोष है? जो गुरु जी ने साधना बताई मैं तो तन-मन-धन से कर रही थी। अब पता चला कि वे गुरु नहीं है, वे तो नीम हकीम हैं। मानव जीवन के सब से बड़े शत्रु हैं। यदि मुझे यह सत्य साधना मिल जाती तो मेरा पुत्र नहीं मरता। क्योंकि मैंने आपके सेवकों के सुखों को देखा है तथा उन पर आने वाली भयंकर आपतियों को टलते देखा है। तब मैं आपका सतसंग सुनने आई हूं तथा आप का लगातार चार दिन तक सतसंग सुनकर आज उपदेश लेने की इच्छा हुई है। मैंने उस बहन से कहा कि जिन साधनाओं को आप कर रही थी वे सर्व शास्त्र विधि अनुसार नहीं थी, जिस कारण आपको परमेश्वर का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। यह तो आप ने स्वयं ही निर्णय लेकर बता दिया। क्योंकि आज तक आपको सत्संग ही प्राप्त नहीं हुआ था। जिसे आप सतसंग जान कर श्रवण करती थी वह सतसंग नहीं लोक वेद (सुना सुनाया शास्त्र विरुद्ध ज्ञान) था। जो आप

किसी धाम पर जाती थी तथा पाठ करवाती थी। आदरणीय गरीबदास जी की पूजा करती थी। जब कि आदरणीय गरीबदास जी तो कहते हैं कि :-

सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्ध हैं तीर। दास गरीब सतपुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मण्डल रहे थीर। दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिलें कबीर।।
पूजें देई धाम को, शीश हलावें जो। गरीबदास साची कहैं, हद काफिर हैं सो।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा उद्धार भी परमेश्वर कबीर(कविर्देव) ने किया तथा तुम भी उसी सर्वशक्तिमान कबीर(कविरमितौजा) परमेश्वर की ही भक्ति करो। उसके लिए कहा है कि पूर्ण संत जो कबीर परमेश्वर (कविर्देव) का कृपा पात्र हो, उससे उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। झूठे गुरुओं के आश्रित रहने से जीवन व्यर्थ होता है। उस शास्त्र विरुद्ध साधना बताने वाले नकली गुरु को त्याग देना चाहिये। उसके तो दर्शन भी अशुभ होते हैं। आदरणीय गरीबदास साहेब जी अपनी अमृतवाणी में कहते हैं कि :-

झूठे गुरु को लीतर लावैं, उसको निश्चय पीटे। उसके पीटे पाप नहीं है, घर से काढ़ घसीटे।।

उपरोक्त अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास साहेब जी शास्त्र विधि रहित साधना बता कर अनमोल मानव जन्म को नष्ट करने वाले नकली (झूठे) मार्ग दर्शकों (गुरुओं) के विषय में कह रहे हैं कि वे आप का जीवन नष्ट करने वाले हैं। उनसे तुरंत छुटकारा लेना चाहिये। घर में घुसने नहीं देना चाहिए। वे तो परमेश्वर कबीर (कविर्देव) के द्रोही हैं तथा काल के भेजे दूत हैं।

''क्या परमेश्वर आयु बढा सकता है ?''

''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''
भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (C.M.O.) का प्रमाण

प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहता है कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो तेरे प्राणों की रक्षा करूं तथा तेरी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जीवन प्राप्त प्राणी ! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलुं।

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख। अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।

मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा(C.M.O. - M.B.B.S., M.S.(Eye specalist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छट्टी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specalist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।

ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम

उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बिमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान भी अवश्य किया था।

वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम. ओ. के पद पर तैनात हूँ। परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त उचित निरिक्षण के बाद मेरा ईलाज शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खडे हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आर्शीवाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रोकर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/Colledge का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटों सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर(कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि --

'एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए। माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।'

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो गया कि

माँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

कबीर परमेश्वर सशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना(भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।

"भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट M.R.I. तथा M.R.I. Angio graphy इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं।

''सत साहेब''

प्रार्थी
भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा।
C.M.O. (M.B.B.S. M.S.)

'' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

भक्त राजकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण

मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली'(M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला- रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक (फोन - 9813844747) में रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बिमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं हो सकती क्योंकि इस बिमारी से गला रूकता था और सांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को। अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था ?

जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, कण्डेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास गांव समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।

मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी
बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा ? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं

है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।

मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोडा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?

परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।

तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इस माँ के नाम लेने से अच्छी नींद आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बिमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है।

एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बिमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न'(जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ? जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्या पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे(उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको

आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे। ऐसे ही खेड़ा कचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बिमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।

मैं बोहतावाला (जीन्द) एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बिमारी मैं काट दूंगा। आपकी बिमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बिमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।

मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।

अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी। बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया।

तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है ? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है ?

हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ।

मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।

सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबिज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र(नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बिमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।

प्रार्थी

हैडमास्टर रामकुमार(एम.ए.बी.एड.)

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा दे पाए। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को ईशारा ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

ये संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास ये वक्त जात है, रोवेगो इस पहरे नूं।।

"अन् अधिकारी से यज्ञ व पाठ करवाना व्यर्थ है"

जिसको पूर्ण परमात्मा का मार्ग दर्शन करने का अधिकार नहीं है तथा उसके पास सत्य भक्ति तीन मंत्र की नहीं है, वह अन अधिकारी होता है। पूर्ण संत जो पूर्ण परमेश्वर की वास्तविक साधना बताता है उसे गुरु बना कर उसी के माध्यम से सर्व धार्मिक अनुष्ठान करवाना हितकर है।

कबीर गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।
गुरु बिन यज्ञ हवन जो करही, निष्फल जाएं कबहुं नहीं फलहीं।

एक बार राजा परिक्षित को सातवें दिन सर्प ने डसना था। उस समय सर्व ऋषियों ने यह निर्णय लिया कि राजा को सात दिन तक श्रीमद्भागवद सुधासागर का पाठ सुनाया जाये, ताकि राजा का मोह संसार से हट जाए। कौन ऐसा कथा करने वाला ऋषि है जिसके पाठ करने से राजा का कल्याण हो सके ?

विचार करें :- सातवें दिन पता लग जाना था कि कथा (पाठ) करने वाला अधिकारी है या नहीं। इसलिए पृथ्वी पर उपस्थित सर्व ऋषियों व महर्षियों ने पाठ (कथा) करने का कार्य स्वीकार नहीं किया। क्योंकि वे महापुरुष प्रभु के संविधान से परिचित थे, इसलिए राजा परिक्षित के जीवन से खिलवाड़ नहीं किया तथा जो ढोंगी थे वे इस डर से सामने नहीं आए कि सातवें दिन पोल खुल जायेगी। उस समय

स्वर्ग से महर्षि सुखदेव जी बुलाए गए जो विमान में बैठ कर आए। आते ही श्री सुखदेव जी ने राजा परिक्षित जी से कहा कि राजन आप मेरे से उपदेश प्राप्त करो अर्थात् मुझे गुरु बनाओ तब कथा (पाठ) करने का फल प्राप्त होगा। राजा परिक्षित ने श्री सुखदेव जी को गुरु बनाया तब सात दिन श्री भागवत सुधासागर (श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी की लीला) की कथा सुनाई। राजा को सर्प ने डसा। राजा की मृत्यु हो गई। सूक्ष्म शरीर में राजा परिक्षित अपने गुरु श्री सुखदेव जी के साथ विमान में बैठ कर स्वर्ग गए। क्योंकि पहले राजा बहुत धार्मिक होते थे, पुण्य करते रहते थे।

राजा परिक्षित ने श्री कृष्ण जी से उपदेश भी प्राप्त था। उन्हीं के मार्ग दर्शन अनुसार बहुत धर्म किया था। परन्तु बाद में कलयुग के प्रभाव से ऋषि भिंडी के गले में सर्प डालने से तथा अन्य मर्यादा हीन कार्य करने से राजा परिक्षित का उपदेश खण्ड हो गया था। उस समय न तो किसी ऋषि जी ने राजा को उपदेश दे कर शिष्य बनाने की हिम्मत की, क्योंकि वे गुरु बनने योग्य नहीं थे। उन्हें उपदेश देने का अधिकार नहीं था। केवल श्री कृष्ण जी ही उपदेश देते थे, जो पाण्डवों के भी गुरु जी थे तथा छप्पन (56) करोड़ यादवों के भी गुरु जी थे। राजा परिक्षित के पुण्यों के आधार से श्री सुखदेव जी गुरु बन कर उसको कथा सुनाकर संसार से आस्था हटवा कर केवल स्वर्ग ले गए। इतना लाभ राजा परिक्षित को हुआ। स्वर्ग का समय पूरा होने अर्थात् पुण्य क्षीण होने के उपरान्त राजा परिक्षित तथा सुखदेव जी भी नरक जायेंगे, फिर चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में नाना कष्ट उठायेंगे। जन्म-मृत्यु समाप्त नहीं हुआ अर्थात् मुक्त नहीं हुए।

वर्तमान के सन्तों व महन्तों को स्वयं ही ज्ञान नहीं कि हम जो शास्त्र विरुद्ध साधना कर तथा करवा रहे हैं यह कितनी भयंकर कष्ट दायक दोनों (गुरु जी व शिष्यों) को होगी। इसलिए पुनर् विचार करना चाहिए तथा झूठे गुरुजी को तथा झूठी (शास्त्र विरुद्ध) पूजाओं को तुरन्त त्याग कर सत्य साधना प्राप्त करके आत्म कल्याण करवाना चाहिए। वह साधना मुझ दास के पास पूर्ण रूपेण उपलब्ध है।

सन्त रामपाल जी महाराज

❑❑❑

।।प्रमाण के लिए गीता जी के श्लोक।।

अध्याय 7 का श्लोक 12

ये, च, एव, सात्त्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मत्तः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।12।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्त्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मत्तः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परंतु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं। (12)

केवल हिन्दी अनुवाद : और भी जो सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति भाव हैं और जो रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति तथा तमोगुण शिव से संहार हैं उन सबको तू मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं ऐसा (विद्धि) जान परंतु वास्तवमें उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं। (12)

अध्याय 7 का श्लोक 13

त्रिभिः,गुणमयैः,भावैः,एभिः,सर्वम्,इदम्,जगत्,मोहितम्,
न अभिजानाति, माम्, एभ्यः, परम्, अव्ययम्।।13।।

अनुवाद : (एभिः) इन (गुणमयैः) गुणोंके कार्यरूप सात्विक श्री विष्णु जी के प्रभाव से, राजस श्री ब्रह्मा जी के प्रभाव से और तामस श्री शिवजी के प्रभाव से (त्रिभिः) तीनों प्रकारके (भावैः) भावोंसे (इदम्) यह (सर्वम्) सारा (जगत्) संसार - प्राणिसमुदाय (माम्) मुझ काल के ही जाल में (मोहितम्) मोहित हो रहा है अर्थात् फंसा है (एभ्यः) इसलिए (परम् अव्ययम्) पूर्ण अविनाशीको (न) नहीं (अभिजानाति) जानता। (13)

केवल हिन्दी अनुवाद : इन गुणोंके कार्यरूप सात्विक श्री विष्णु जी के प्रभाव से, राजस श्री ब्रह्मा जी के प्रभाव से और तामस श्री शिवजी के प्रभाव से तीनों प्रकारके भावोंसे यह सारा संसार - प्राणिसमुदाय मुझ काल के ही जाल में मोहित हो रहा है अर्थात् फंसा है इसलिए पूर्ण अविनाशीको नहीं जानता। (13)

{परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी की महिमा सन्त गरीबदास जी ने कही है तथा काल का जाल समझाया है :- गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश, माया और धर्मराया(काल) कहिए। इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया वाणी हमरी लहिए।।}

अध्याय 7 का श्लोक 14

दैवी, हि, एषा, गुणमयी, मम, माया, दुरत्यया, माम्,
एव, ये, प्रपद्यन्ते, मायाम्, एताम्,तरन्ति,ते।।14।।

अनुवाद : (हि) क्योंकि (एषा) यह (दैवी) अलौकिक अर्थात् अति अद्भूत (गुणमयी) रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव रूपी त्रिगुणमयी (मम) मेरी (माया) माया (दुरत्यया) बड़ी दुस्तर है परंतु (ये) जो पुरुष केवल (माम्) मुझको (एव) ही निरंन्तर (प्रपद्यन्ते) भजते हैं (ते) वे (एताम्) इस (मायाम्) रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण रूपी मायाका (तरन्ति) उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् तीनों गुणों रजगुण ब्रह्माजी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी से ऊपर उठ कर काल ब्रह्म की साधना में लग जाते हैं। (14)

केवल हिन्दी अनुवाद : क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भूत रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव रूपी त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परंतु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंन्तर भजते हैं वे इस रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण रूपी मायाका उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् तीनों गुणों रजगुण ब्रह्माजी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी से ऊपर उठ कर काल ब्रह्म की साधना में लग जाते हैं। (14)

अध्याय 7 का श्लोक 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः।।15।।

अनुवाद : (मायया) रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव जी रूपी त्रिगुणमई माया की साधना से होने वाले क्षणिक लाभ पर ही आश्रित हैं अन्य साधना नहीं करना चाहते अर्थात् इसी त्रिगुणमई माया के द्वारा (अपहृतज्ञानाः) जिनका ज्ञान हरा जा चुका है जो मेरी अर्थात् ब्रह्म साधना भी नहीं करते, इन्हीं तीनों देवताओं तक सीमित रहते हैं ऐसे (आसुरम् भावम्) आसुर स्वभावको (आश्रिताः) धारण किये हुए (नराधमाः) मनुष्यों में नीच (दुष्कृतिनः) दूषित कर्म करनेवाले (मूढाः) मूर्ख (माम्) मुझको (न) नहीं (प्रपद्यन्ते) भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं। (15)

केवल हिन्दी अनुवाद : रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव जी रूपी त्रिगुणमई माया की साधना से होने वाले क्षणिक लाभ पर ही आश्रित हैं अन्य साधना नहीं करना चाहते अर्थात् इसी त्रिगुणमई माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है जो मेरी अर्थात् ब्रह्म साधना भी नहीं करते, इन्हीं तीनों देवताओं तक सीमित रहते हैं ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों की साधना ही करते रहते हैं। (15)

भावार्थ - गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 का भावार्थ है कि जो साधक स्वभाव वश तीनों गुणों रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी तक की साधना से मिलने वाले लाभ पर ही आश्रित रहकर इन्हीं तीनों प्रभुओं की भक्ति से जिन का ज्ञान हरा जा चुका है वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझ ब्रह्म अर्थात् गीता ज्ञानदाता को भी नहीं भजते गीता अध्याय 7 श्लोक 20 से 23 का भी इन्हीं से लगातार सम्बन्ध है।

अध्याय 7 का श्लोक 18

उदाराः, सर्वे, एव, एते, ज्ञानी, तु, आत्मा, एव, मे, मतम्,
आस्थितः, सः, हि, युक्तात्मा, माम्, एव, अनुत्तमाम्, गतिम्।।18।।

अनुवाद : (हि) क्योंकि (मे) मेरे (मतम्) विचार में (एते) ये (सर्वे,एव) सभी ही (ज्ञानी) ज्ञानी (आत्मा) आत्मा (उदाराः) उदार हैं (तु) परंतु (सः) वह (माम्) मुझमें (एव) ही (युक्तात्मा) लीन आत्मा (अनुत्तमाम्) मेरी अति घटिया (गतिम्) मुक्तिमें (एव) ही (आस्थितः) आश्रित हैं। (18)

केवल हिन्दी अनुवाद : क्योंकि मेरे विचार में ये सभी ही ज्ञानी आत्मा उदार हैं परंतु वह मुझमें ही लीन आत्मा मेरी अति घटिया मुक्तिमें ही आश्रित हैं। (18)

गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 का भावार्थ है कि मेरी अर्थात् ब्रह्म की भक्ति भी चार प्रकार के भक्त करते हैं 1. आर्त्त : जो संकट निवार्ण के लिए वेद मंत्रों से ही अनुष्ठान करते हैं 2. अर्थार्थी : जो धन लाभ के लिए वेद मंत्रों से ही अनुष्ठान आदि करता है 3. जिज्ञासु : जो ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से वेदों का पठन-पाठन करके ज्ञान संग्रह कर लेता है फिर वक्ता बनकर जीवन व्यर्थ कर जाता है 4. ज्ञानी : जिस साधक ने वेदों को पढ़ा तथा जाना कि मनुष्य जीवन केवल प्रभु प्राप्ति के लिए ही मिला है तथा एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति से ही पूर्ण होगा। तत्वदर्शी संत जो गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में वर्णित है न मिलने से ब्रह्म को ही पूर्ण परमात्मा मान कर काल (ब्रह्म) साधना करते रहे जो अति अनुत्तम कही है अर्थात् ब्रह्म साधना भी अश्रेष्ठ है।

प्रश्न :- आपने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 के अनुवाद में अर्थ का अनर्थ किया है ''अनुत्तमाम्'' का अर्थ अश्रेष्ठ किया है। जब कि समास में अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम होता है जिस से उत्तम कोई और न हो उस के विषय में समास में अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम होता है। अन्य गीता अनुवाद कर्त्ताओं ने सही अर्थ किया है अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम किया है।

उत्तर :- मैं आप की इस बात को सत्य मानकर आप से प्रार्थना करता हूँ कि ''गीता ज्ञान दाता अपनी साधना के विषय में गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 में बता रहे हैं। यदि गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना व गति को अनुत्तम कह रहे हैं। जिस का भावार्थ आप के समास के अनुसार यह हुआ कि गीता ज्ञान दाता की गति से उत्तम अन्य कोई गति नहीं अर्थात् मोक्ष लाभ नहीं।

गीता ज्ञान दाता स्वयं गीता अध्याय 18 श्लोक 62 व अध्याय 15 श्लोक 4 में किसी अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कह रहे हैं। उसी की कृपा से परम शान्ति व शाश्वत स्थान सदा रहने वाला मोक्ष स्थल अर्थात् सत्यलोक प्राप्त होगा। अपने विषय में भी कहा है कि मैं भी उसी की शरण हूँ। उसी पूर्ण परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए तथा कहा है कि उस परमेश्वर के परमपद (सत्यलोक) को प्राप्त करना चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर इस संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका जन्म मृत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

अपने से अन्य परमात्मा के विषय में गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 46,61-62,64,66 अध्याय 15 श्लोक 4,16-17, अध्याय 13 श्लोक 12 से 17, 22 से 24, 27-28,30-31,34 अध्याय 5 श्लोक 6-10,13 से 21 तथा 24-25-26 अध्याय 6 श्लोक 7,19,20,25,26-27 अध्याय 4 श्लोक 31-32, अध्याय 8 श्लोक 3,8 से 10,17 से 22, अध्याय 7 श्लोक 19 से 29, अध्याय 14 श्लोक 19 आदि-2 श्लोकों में कहा है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ अर्थात् उत्तम परमात्मा तो अन्य है जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उत्तम पुरूषः तु अन्यः जिसका अर्थ है उत्तम परमात्मा तो अन्य ही है। इसलिए उस उत्तम पुरूष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ परमात्मा की गति अर्थात् उस से मिलने वाला मोक्ष भी अति उत्तम सिद्ध हुआ। इस से यह भी सिद्ध हुआ कि उस परमेश्वर अर्थात् पूर्ण परमात्मा की गति गीता ज्ञान दाता वाली गति से उत्तम हुई। इसलिए गीता ज्ञान दाता वाली गति सर्व श्रेष्ठ नहीं है। अर्थात् जिस से श्रेष्ठ कोई न हो। यह विशेषण भी गलत सिद्ध हुआ। क्योंकि जब गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ कोई और परमेश्वर है तो उस की गति भी गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम का अर्थ अश्रेष्ठ ही न्याय संगत है अर्थात् उचित है। आप तथा अन्य गीता अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थ का अनर्थ किया है। जो अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम कहा तथा किया है।

अध्याय 8 का श्लोक 21

अव्यक्तः,अक्षरः,इति,उक्तः,तम्,आहुः,परमाम्,गतिम्।
यम्,प्राप्य,न, निवर्तन्ते, तत् धाम, परमम्, मम्।।21।।

अनुवाद : (अव्यक्तः) अदृश अर्थात् परोक्ष (अक्षरः) अविनाशी (इति) इस नामसे (उक्तः) कहा गया है (तम्) अज्ञान के अंधकार में छुपे गुप्त स्थान को (परमाम्, गतिम्) परमगति (आहुः) कहते हैं (यम्) जिसे (प्राप्य) प्राप्त होकर मनुष्य (न, निवर्तन्ते) वापस नहीं आते (तत् धाम) वह लोक (परमम् मम्) मुझ से व मेरे लोक से श्रेष्ठ है। (21)

केवल हिन्दी अनुवाद : अदृश अर्थात् परोक्ष अविनाशी इस नामसे कहा गया है अज्ञान के अंधकार में छुपे गुप्त स्थान को परमगति कहते हैं जिसे प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते वह लोक मुझ से व मेरे लोक से श्रेष्ठ है। (21)

क्योंकि काल (ब्रह्म) सत्यलोक से निष्कासित है, इसलिए कह रहा है कि मेरा भी वास्तविक स्थान सत्यलोक है। मैं भी पहले वहीं रहता था तथा मेरे लोक से श्रेष्ठ है। जहाँ जाने के पश्चात् वापिस जन्म-मृत्यु में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं।

उपरोक्त श्लोक 18,20,21 अध्याय 8 के श्लोकों में दो परमात्माओं का वर्णन है। श्लोक 18 में कहा है कि सर्व प्राणी इस अव्यक्त परमात्मा अर्थात् परब्रह्म में प्रलय समय लीन हो जाते है। फिर उत्पत्ति समय उत्पन्न हो जाते हैं। श्लोक 20-21 में कहा है कि उस अव्यक्त अर्थात् परब्रह्म से दूसरा अव्यक्त परमात्मा अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जहाँ जाने के पश्चात् प्राणी फिर लौट कर संसार में नहीं आते। अर्थात्

पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं। एक अव्यक्त गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में है। इस प्रकार तीन परमात्मा सिद्ध हुए। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16 व 17 में है।

अध्याय 8 का श्लोक 22

पुरुषः, सः, परः, पार्थ, भक्त्या, लभ्यः, तु, अनन्यया।
यस्य, अन्तःस्थानि, भूतानि, येन, सर्वम्, इदम्, ततम्।।22।।

अनुवाद : (पार्थ) हे पार्थ! (यस्य) जिस परमात्माके (अन्तःस्थानि) अन्तर्गत (भूतानि) सर्वप्राणी हैं और (येन) जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मासे (इदम्) यह (सर्वम्) समस्त जगत् (ततम्) परिपूर्ण है (सः) वह (परः) परम (पुरुषः) परमात्मा (तु) तो (अनन्यया) अनन्य (भक्त्या) भक्तिसे ही (लभ्यः) प्राप्त होने योग्य है। (22)

केवल हिन्दी अनुवाद : हे पार्थ! जिस परमात्माके अन्तर्गत सर्वप्राणी हैं और जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मासे यह समस्त जगत् परिपूर्ण है वह परम परमात्मा तो अनन्य भक्तिसे ही प्राप्त होने योग्य है। (22)

अध्याय 8 का श्लोक 23

यत्र, काले, तु, अनावृत्तिम्, आवृत्तिम्, च, एव, योगिनः,
प्रयाताः यान्ति, तम्, कालम्, वक्ष्यामि, भरतर्षभ।।23।।

अनुवाद : (भरतर्षभ) हे अर्जुन! (यत्र) जिस (काले) कालमें (प्रयाताः) शरीर त्यागकर गये हुए (योगिनः) योगीजन (तु) तो (अनावृत्तिम्) वापस न लौटने वाली गतिको (च) और जिस कालमें गये हुए (आवृत्तिम्) वापस लौटनेवाली गतिको (एव) ही (यान्ति) प्राप्त होते हैं (तम्) उस गुप्त (कालम्) कालको अर्थात् दोनों मार्गोंको (वक्ष्यामि) कहूँगा। (23)

केवल हिन्दी अनुवाद : हे अर्जुन! जिस कालमें शरीर त्यागकर गये हुए योगीजन तो वापस न लौटने वाली गतिको और जिस कालमें गये हुए वापस लौटनेवाली गतिको ही प्राप्त होते हैं उस गुप्त कालको अर्थात् दोनों मार्गोंको कहूँगा। (23)

अध्याय 17 का श्लोक 23

ॐ, तत्, सत्, इति, निर्देशः, ब्रह्मणः, त्रिविधः, स्मृतः,
ब्राह्मणाः, तेन, वेदाः, च, यज्ञाः, च, विहिताः, पुरा।।23।।

अनुवाद : (ॐ)ओं मन्त्र ब्रह्म का(तत्) तत् यह सांकेतिक मंत्र पारब्रह्म का (सत्) सत् यह सांकेतिक मन्त्र पूर्णब्रह्म का है (इति) ऐसे यह (त्रिविधः) तीन प्रकार के (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा के नाम सुमरण का (निर्देशः) आदेश (स्मृतः) कहा है (च) और (पुरा) सृष्टिके आदिकालमें (ब्राह्मणाः) विद्वानों ने (तेन) उसी (वेदाः) तत्वज्ञान के आधार से वेद (च) तथा (यज्ञाः) यज्ञादि (विहिताः) रचे। उसी आधार से साधना करते थे। (23)

केवल हिन्दी अनुवाद : ओं मन्त्र ब्रह्म का तत् यह सांकेतिक मंत्र पारब्रह्म का सत् यह सांकेतिक मन्त्र पूर्णब्रह्म का है ऐसे यह तीन प्रकार के पूर्ण परमात्मा के नाम सुमरण का आदेश कहा है और सृष्टिके आदिकालमें विद्वानों ने उसी तत्वज्ञान के आधार से वेद तथा यज्ञादि रचे। उसी आधार से साधना करते थे। (23)

अध्याय 18 का श्लोक 62

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत, तत्प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम्।।62।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! तू (सर्वभावेन) सब प्रकारसे (तम्) उस परमेश्वरकी (एव) ही (शरणम्) शरणमें (गच्छ) जा। (तत्प्रसादात्) उस परमात्माकी कृपा से ही तू (पराम्) परम (शान्तिम्) शान्तिको तथा (शाश्वतम्) सदा रहने वाला सत (स्थानम्) स्थान/धाम/लोक को अर्थात् सत्लोक को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा। (62)

केवल हिन्दी अनुवाद : हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें जा। उस परमात्माकी कृपा से ही तू परम शान्तिको तथा सदा रहने वाला सत स्थान/धाम/लोक को अर्थात् सत्लोक को प्राप्त होगा। (62)

अध्याय 18 का श्लोक 63

इति, ते, ज्ञानम्, आख्यातम्, गुह्यात्, गुह्यतरम्, मया,
विमृश्य, एतत्, अशेषेण, यथा, इच्छसि, तथा, कुरु।।63।।

अनुवाद : (इति) इस प्रकार (गुह्यात्) गोपनीयसे (गुह्यतरम्) अति गोपनीय (ज्ञानम्) ज्ञान (मया) मैंने (ते) तुझसे (आख्यातम्) कह दिया (एतत्) इस रहस्ययुक्त ज्ञानको (अशेषेण) पूर्णतया (विमृश्य) भलीभाँति विचारकर (यथा) जैसे (इच्छसि) चाहता है (तथा) वैसे ही (कुरु) कर। (63)

केवल हिन्दी अनुवाद : इस प्रकार गोपनीयसे अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुझसे कह दिया इस रहस्ययुक्त ज्ञानको पूर्णतया भलीभाँति विचारकर जैसे चाहता है वैसे ही कर। (63)

अध्याय 18 का श्लोक 64

सर्वगुह्यतमम्, भूयः, श्रृणु, मे, परमम्, वचः,इष्टः, असि, मे, दृढम्, इति, ततः, वक्ष्यामि, ते, हितम्।।64।।

अनुवाद : (सर्वगुह्यतमम्) सम्पूर्ण गोपनीयोंसे अति गोपनीय (मे) मेरे (परमम्) परम रहस्ययुक्त (हितम्) हितकारक (वचः) वचन (ते) तुझे (भूयः) फिर (वक्ष्यामि) कहूँगा (ततः) इसे (श्रृणु) सुन (इति) यह पूर्ण ब्रह्म (मे) मेरा (दृढम्) पक्का निश्चित (इष्टः) इष्टदेव अर्थात् पूज्यदेव (असि) है। (64)

केवल हिन्दी अनुवाद : सम्पूर्ण गोपनीयोंसे अति गोपनीय मेरे परम रहस्ययुक्त हितकारक वचन तुझे फिर कहूँगा इसे सुन यह पूर्ण ब्रह्म मेरा पक्का निश्चित इष्टदेव अर्थात् पूज्यदेव है। (64)

अध्याय 18 का श्लोक 65

मन्मनाः, भव, मद्भक्तः, मद्याजी, माम्, नमस्कुरु,
माम्, एव, एष्यसि, सत्यम्, ते, प्रतिजाने, प्रियः, असि, मे।।65।।

अनुवाद : (मन्मनाः) एक मनवाला (मद्भक्तः) मेरा मतानुसार भक्त (भव) हो (मद्याजी) मतानुसार मेरा पूजन करनेवाला (माम्) मुझको (नमस्कुरु) प्रणाम कर। (माम्) मुझे (एव) ही (एष्यसि) प्राप्त होगा (ते) तुझसे (सत्यम्) सत्य (प्रतिजाने) प्रतिज्ञा करता हूँ (मे) मेरा (प्रियः) अत्यन्त प्रिय (असि) है। (65)

केवल हिन्दी अनुवाद : एक मनवाला मेरा मतानुसार भक्त हो मतानुसार मेरा पूजन करनेवाला मुझको प्रणाम कर। मुझे ही प्राप्त होगा तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ मेरा अत्यन्त प्रिय है। (65)

अध्याय 18 का श्लोक 66

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज,
अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः।।66।।

अनुवाद : गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में जिस परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है इस श्लोक 66 में भी उसी के विषय में कहा है कि (माम्) मेरी (सर्वधर्मान्) सम्पूर्ण पूजाओंको (माम्) मुझ में (परित्यज्य) त्यागकर तू केवल (एकम्) एक उस अद्वितीय अर्थात् पूर्ण परमात्मा की (शरणम्) शरणमें (व्रज) जा। (अहम्) मैं (त्वा) तुझे (सर्वपापेभ्यः) सम्पूर्ण पापोंसे (मोक्षयिष्यामि) छुड़वा दूँगा तू (मा,शुचः) शोक मत कर। (66)

केवल हिन्दी अनुवाद : गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में जिस परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है इस श्लोक 66 में भी उसी के विषय में कहा है कि मेरी सम्पूर्ण पूजाओंको मुझ में त्यागकर तू केवल एक उस अद्वितीय अर्थात् पूर्ण परमात्मा की शरणमें जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे छुड़वा दूँगा तू शोक मत कर। (66)

विशेष :- अन्य गीता अनुवाद कर्ताओं ने ''व्रज्'' शब्द का अर्थ आना किया है जो अनुचित है ''व्रज्'' शब्द का अर्थ जाना, चला जाना आदि होता है।

भावार्थ :- श्लोक 63 का भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि हे अर्जुन! यह गीता वाला अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुझे कह दिया। फिर श्लोक 64 में गीता ज्ञानदाता एक और सम्पूर्ण गोपनीयों से भी गोपनीय वचन कहता है कि वह परमेश्वर जिस के विषय में श्लोक 62 में कहा है वह परमेश्वर मेरा (गीता ज्ञान दाता) का ईष्ट देव अर्थात् पूज्य देव है यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 4 में भी कहा है कि मैं भी उस परमेश्वर की शरण हूँ। इससे सिद्ध है कि गीता ज्ञान दाता प्रभु से कोई अन्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर है वही पूजा के योग्य है। यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 17 में भी है गीता ज्ञान दाता प्रभु कहता है कि अध्याय 15 श्लोक 16 में वर्णित क्षर पुरूष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) से भी श्रेष्ठ परमेश्वर तो उपरोक्त दोनों से अन्य ही है वही वास्तव में परमात्मा कहलाता है। वह वास्तव में अविनाशी है।

❑❑❑